डॉ. गिरजा शंकर गुप्ता
सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य)
दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

ख्याति का अर्थ परिभाषा एवं मूल्यांकन की विधियां

ख्याति का अर्थ परिभाषा एवं मूल्यांकन की विधियां

ख्याrति का अर्थ

सरल शब्दोंF में ख्या ति से हमारा आशय व्य वसाय की प्र स द्ध के मूल्ये से होता है। ख्याति एक संपत्ती हैं जिसे देखा नही जा सकता। ख्याति वह आकर्षण हैं जो ग्राहकों को अपनी और खीच लेती हैं।

ख्याषति का वर्णन करना जितना आसान है उतना ही अधिक कठिन उसे परिभाषित करना है। व्या्पारिक दृष्टिकोण से ख्याअति को एक ऐसे तत्व् के रूप में माना जा सकता है जिसके कारण अथिवा जिसके द्वारा व्ययवसाय में विनियोग की पूंजी पर सामान्या से अधिक लाभ कमाया जा सकता है।

ख्याति की परिभाषा

लॉर्ड मेकटाटन के अनुसार, ‘‘ख्याभति व्याैपार के अच्छेद नाअच्छे挺 सम्बं ध व सम्पडर्क का लाभ है। यह वह आकर्षण शक्ति है जो ग्राहकों को लाती है। यह एक ऐसी चीज है जो कि पुराने सुस्थाैपित व्याकपार को नये व्यालपार से भिन्न करती है।"

जे.आर.बाटलीबॉय के अनुसार, ‘‘ख्या ति किसी पूर्व संस्थायपित व्या्पार का कुछ परिस्थितियों के साथ सम्बबद्ध एक अतिरिक्त, विक्रय योग्या मूल्यू है जो कि उसके सुप्रसिद्ध होने वाले संस्थाबपित संबंधों, निरन्तोर रहने वाली समृद्धि और इस आशा से कि भविष्ये में व्याकपार की लाभार्जन शक्ति स्वामित्वी में परिवर्तन होने पर भी ग्राहकों के विश्धाकस और अनुकम्पाज के कारण पूर्ववत् बनी रहेगी, के कारण होती है।"

अतः कहा जा सकता है कि ख्याोति किसी सुसंस्था पित व्या पार की एक ऐसी सम्पकत्ति है जिसके कारण व्या पार को अधिक लाभ होता है। व्याापार की

स्थिति, व्याकपारी के सुमधुर व्य वहार व विक्रय कला, अच्छे माल की प्राप्ति आदि के कारणों से अधिक से अधिक ग्राहक उसकी ओर आकर्षित होते है जिसके फलस्वोरूप व्या पार की बिक्री बढ़ जाती है और लाभ भी बढता है ऐसा होने पर व्यांपार की साख या ख्यारति में वृद्धि होती है।

ख्या ति के मूल्यांीकन की विधियां

ख्या ति व्यमवसाय की एक अदृश्या सम्पृत्ति है , इसलिये इसका वास्त विक मूल्यां कन असंभव है। इसके सम्बंकध में सिर्फ अनुमान लगाया जा सकता है। ख्यायति का मूल्यां कन करना कुछ परिस्थितियों में आवश्याक हो जाता है। ख्याति एक अदृश्य सम्पत्ति होती है अतः इसका उचित मूल्य ज्ञात करना एक मुश्किल कार्य होता है। व्यवसाय के विक्रय की दशा में इसका मूल्य क्रेता तथा विक्रेता कर आपसी ठहराव पर निर्भर करता है। ख्याति के मूल्यांकन की निम्न विधियां प्रचलित है :

1. औसत लाभ विधि **(Average Profit Method)**
2. अधि लाभ विधि **(Super Profit Method)**
3. अधिलाभ पंजीकरण विधि **(Capitalisation of Super Profit Method)**
4. वार्षिकी विधि **(Annuity Method)**

1. औसत लाभ विधि - ये ख्याति के मूल्यांकन की एक सरल एवं व्यावहारिक विधि है। इस विधि में ख्याति का मूल्यांकन कुछ गत वर्षों के लाभों और औसत को एक निश्चित संख्या (जैसे तीन वर्षों के क्रय के बराबर या चार वर्षों के क्रय के बराबर आदि) से गुणा करके किया जाता है

इस विधि में गत वर्षों का औसत लाभ ज्ञात करना पड़ता है। इस लाभ को निकालने का उद्देश्य यह जानना होता है कि भविष्य में व्यवसाय में कितने

अनुमानित लाभ सामान्यतः होंगे। अतः पिछले प्रत्येक वर्ष के वास्तविक लाभों में निम्न समायोजन करने के बाद ही औसत लाभ निकालना चाहिए :-

Value of Goodwill = Average Profit × Number of Years of Purchase)

(i) वर्ष की असाधारण आय को सम्बन्धित वर्ष की आय में से कम कर देना चाहिए।

ख्याति और इसकी विशेषताएं जाने

(i i) वर्ष की असाधारण हानि को सम्बन्धित वर्ष की आय में जोड़ देना चाहिए।

(i i i) विनियोगों की आय को सम्बन्धित वर्ष की आय में से कम कर देना चाहिए क्योंकि यह आय व्यवसाय की सामान्य व्यावसायिक आय नही है।

2. अधि लाभ विधि - इस विधि में यह देखा जाता है कि इसी प्रकार के अन्य व्यवसायों की तुलना में हमारी फर्न में कितने लाभ हो रहे हैं। अन्य फर्मों की तुलना में हमारी फर्म में जितने अधिक लाभ हो रहे है, उन्ही लाभों को अधि लाभ कहते है और इन्ही अधिलाभों के आधार पर ख्याति की गणना होती है।

Value of Goodwill = Super Profit × Number of Years of Purchase)

जैसे कि यदि व्यवसाय में हमारी जैसी अन्य फर्मों में 15 % लाभ हो रहे है और हमारी फर्म में 1,00,000 की नियोजित पूंजी पर 25,000 लाभ हो रहे है। तो सामान्य लाभ 1,00,000 पर 15 % = 15,000 होने चाहिए जबकि वास्तविक लाभ 25,000 हो रहे है। अतः 25,000 - 15,000 = 10,000 □ अधिलाभ हुए। अधिलाभों को एक निश्चित संख्या से गुणा करके ख्याति का मूल्यांकन किया जाता है जैसे दो वर्षीय क्रय का तीन वर्षीय क्रय आदि।

3. अधि लाभ पूंजीकरण विधि - इस विधि में पहले अधिलाभ ज्ञात कर लिए जाते है तथा फिर यह ज्ञात करते है कि सामान्य प्रतिफल की दर से इन अधिलाभों को अर्जित करने के लिए कितनी पूंजी की जरूरत होगी। यही पूंजी वास्तव में ख्याति की राशि है। इसके लिए निम्न सूत्र का प्रयोग किया जाता है :-

Goodwill = Super Profit × 100 / Normal Rate of Return

4. वार्षिकी विधि

इस विधि में एक उचित अवधि के लिये एक निर्धारित दर पर अधिलाभांश की राशि का वर्तमान मूल्य निकाला जाता है। यह मूल्यर वार्षिकी सारणी से या सूत्र द्वारा ज्ञात किया जा सकता है। यही मूल्य। ख्याति का मूल्यस होता है। यदि औसत साधारण लाभ को अधिलाभ के स्थाैन पर वार्षिकी माना जाता है तो इस औसत साधारण लाभ का वार्षिकी सारणी या सूत्र द्वारा वर्तमान मूल्यू निकाला जाता है। इस मूल्यण में से शुद्ध सम्पसत्तियों का मूल्यू अथवा लगायी गयी पूंजी को घटाने के बाद ख्याकति की राशि ज्ञात की जाती है।

Goodwill = Super Profit × Present Value of Annuity